RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

महेन्द्र सिंह टिकैत : भारत की किसान राजनीति के चौधरी

श्रीकान्त वर्मा

शोध छात्र, इतिहास विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज

चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत उत्तर प्रदेश के किसान नेता तथा भारतीय किसान यूनियन के अध्यक्ष थे। टिकैत किसानो की समस्याओ के लिए संघर्षरत थे और विशेषकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा के जाट किसनो में उनकी पहचान थी। उन्होने अपने आन्दोलन को राजनीति से बिल्कुल अलग रखा और कई बार राजधानी दिल्ली में भी आकर धरना प्रदर्शन किया। किसान नेता चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत वो शख्सियत थे, जिन्होने एक प्रधानमंत्री से रिश्वत से जुड़ा सवाल पूछ लिया था। वो किसान नेता जो सरकारों तक नहीं जाता था। बल्कि सरकारें खुद चलकर उनके पास आती थी।

आजादी के बाद भारत की किसान राजनीति के वे सबसे बड़े चौधरी थे। वैसे तो आजादी के पहले 1917 के बाद कई किसान आंदोलन हुए और महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल से लेकर स्वामी सहजानंद और प्रो0 एन0 जी0 रंगा जैसे दिग्गज भी उससे जुड़े रहे। आजादी के बाद तमाम इलाकों में किसान संगठन बने और किसानों के कई बड़े नेता उभरे। समय के साथ वे बदल गये, उनका रंग ढंग और तेवर बदल गया। लेकिन चौधरी टिकैत उन सबसे अलग और सबसे बड़े किसान नेता के तौर पर भारत के किसानों के दिलों में जगह बनाने में कामयाब रहे। जो दिल में आया वह कहा और किया। इसमें किसी हानि लाभ की परवाह नहीं की। अंग्रेजी मीडिया उनको लेकर काफी नकारात्मक रही, उनको कुछ किसानों का नायक बना कर पेश किया जाता रहा। लेकिन उन्होनें इसकी कोई परवाह नहीं की। उन्होने ऐसे दौर में किसानों को संगठित किया और उसकी आवाज बने जिस समय किसानों को संगठन की सबसे अधिक जरूरत थी। वे जीते जी किवंदिती बन गए थे।

चौधरी टिकैत के नेतृत्व में भारत में किसानों का जो आन्दोलन खड़ा हुआ उसने भारत ही नहीं पूरी दुनिया पर असर डाला। वही अकेला आंदोलन था, जिसमें विदेशी मीडिया हैरानी के साथ मेरठ, गंग नहर के किनारे भोपा, सिसौली, शामली ओर बोट क्लब पर पहुंच कर इस संगठन और करिश्माई व्यक्तित्व के तमाम पहलुओं की तलाश करती हुई पायी गयी। 1987 के बाद अपनी आखिरी सांस तक वे भारत के किसानों के एकछत्र नेता बने रहें। इसके बावजूद कि तमाम मौकों पर सरकारें उनकी ताकत को मिटाने के लिए सभी संभव प्रयास करती रहीं। वे भारत के अकेले किसान नेता थे जिन्होने किसानों को जाति, धर्म और क्षेत्रीयता के खांचे में बंटने नहीं दिया। उनका नेतृत्व दक्षिण के उन किसानों ने भी स्वीकार किया जो न उनकी भाषा जानते थे न बोली । लेकिन उनको इस बात का भरोसा था कि चौधरी टिकैत ही हैं जो इमानदारी से उनके लिए खड़े रहेंगे।

चौधरी टिकैत के नेतृत्व में किसान आन्दोलन ने दो अहम उपलब्धियां हासिल की है। पहला यह कि किसानों के संगठन ने उदारीकरण की आंधी में खेती बाड़ी और भारत के कृषि क्षेत्र को एक हद तक बचा लिया। नीतियों में बदलाव के नाते यह क्षेत्र बेशक प्रभावित हुआ लेकिन वैसा नहीं जैसा विश्व व्यापार संगठन या बड़े देश चाहते थे। भारत सरकार को किसानों की ताकत के नाते कई मोरचों पर झुकना पड़ा। इसके लिए टिकैत दिल्ली ही नहीं विदेश तक आवाज उठाने पहुंचे।

दूसरी अहम बात यह थी कि टिकैत ने उत्तर प्रदेश के पश्चिमी अंचल और समग्र रूप से पूरे राज्य में किसानों को जाति और धर्म में बंटने नहीं दिया। किसान आंदोलन के सबसे अहम पड़ाव यानि करमूखेड़ी बिजलीघर पर हुए पुलिस गोलीकांड में दो नौजवानों जयपाल और अकबर की शहादत को कभी नहीं भुलाया। उनके नेतृत्व में हुए अधिकतर विशाल पंचायतों की अध्यक्षता सरपंच एनुद्दीन करते थे और मंच संचालन का काम गुलाम मोहम्मद जौला। 1987 में मेरठ में भयावह सांप्रदायिक दंगे हुए थे लेकिन टिकैत ने ग्रामीण इलाकों में एकता का मिसाल जलाए रखी। विरोधी हमेशा भारतीय किसान यूनियन को जाटों का संगठन बताते रहे, लेकिन अगर जमीन पर आप जाकर देखें तो पता चलता था कि जाट ही नहीं उस जमावड़े में समाज की पूरी धारा समाहित होती थी। उनका सफर आम किसान से महात्मा बनने का सफर था। उनकी आवाज को हिंदू मुसलमान सभी सुनते थे और मानते थे। 1989 में मुजफ्फरनगर के भोपा क्षेत्र की मुस्लिम युवती नईमा के साथ न्याय का आन्दोलन चलाया उसने एक अनूठी एकता का संकेत दिया।

चौधरी टिकैत के जीवन का सफर कांटों भरा था। 1935 में मुजफ्फरनगर के सिसौली गांव में जन्मे चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत का पूरा जीवन ग्रामीणों को संगठित करने में बीता। भारतीय किसान यूनियन के गठन के साथ ही 1986 से उनका लगातार प्रयास रहा कि यह अराजनीतिक संगठन बना रहे। 27 जनवरी 1987 को करमूखेड़ा बिजली घर से बिजली

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

के स्थानीय मुद्दे पर चला आंदोलन की संगठन शक्ति के नाते पूरे देश में चर्चा में आ गया। लेकिन मेरठ की कमिश्नरी 24 दिनों के घेराव ने चौधरी साहब को वैश्विक क्षितिज पर ला खड़ा किया। इस आंदोलन ने पूरी दुनिया में सुर्खियां बटोरी। 24 दिनों तक कमिश्नरी के घेराव के बाद अचानक चौधरी साहब ने आंदोलन समाप्त कर दिया तो बहुत से सवाल उठे।

हालांकि मेरठ से किसान जमावड़े से दिल्ली और लखनऊ की सरकार हिल गयी थी लेकिन यह दिखाने कि लिए कि वे किसानों की ताकत से नहीं डरते कोई मांग मानी नहीं गयी और किसान खाली हाथ लौटे लेकिन निराश के साथ नहीं नयी उम्मीद के साथ। मेरठ के घेराव ने किसानों का संगठन और एकता की परिधि को व्यापक बना दिया और उनको एक ईमानदार नायक मिल गया था, जिसके साथ देश के करीब सारे छोटे बड़े किसान जुड़ कर एक झंडे तले आने के लिए उतावले थे। किसानों के हकों के सवाल पर राज्य और केंद्र सरकार से टिकैत की बार बार लड़ाई हुई। लेकिन उन्होनें आंदोलन को अहिंसक बनाए रखा। उनकी राह गांधी की राह थी और सोच में चौधरी चरण सिंह से लेकर स्वामी विवेकानन्द तक थे। 110 दिनों तक चला रजबपुर सत्याग्रह हो या फिर दिल्ली में वोट क्लब की महापंचायत, फतेहगढ़ केंद्रीय कारागार हो या फिर दिल्ली की तिहाड़ जेल उनका जाना, हर आंदोलनों ने किसान यूनियन की ताकत का विस्तार किया।

दिल्ली–लखनऊ कूच का ऐलान करते तो सरकारों के प्रतिनिधि उनको मनाने रिझाने का प्रयास करते रहते। लेकिन टिकैत जो चाहते थे करते वही थे। प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री तक उनके फोन को तरसते थे लेकिन यह उनकी ताकत का असर था जो उनकी सादगी, ईमानदारी और लाखों किसानों में उनके भरोसे के कारण थी। आंदोलनों में चौधरी साहब हमेशा मंच पर नहीं होते थे। वे हुक्का गुड़गुड़ाते हुए किसानों की भीड़ में शामिल रहते थे। बहुत सें विदेशी पत्रकारों को उनसे मिल कर समझ नहीं आता था कि वे जिससे मिल रहे हैं वे वही चौधरी साहब हैं। धूल माटी से लिपटा उनका कुर्ता, धोती और सिर पर टोपी के साथ बेलाग वाणी, उनको सबसे अलग बनाए हुई थी। जब पूरा देश उनकी ओर देखता था तो भी वे रूटीन के जरूरी काम उसी तरह करते हुए देखे जाते थे जैसा भारत में आम किसान अपने घरों में करता है। उनमें कभी कोई दंभ नहीं दिखा। आंदोलन सफल हुए हों या विफल हरे एक से वे सीख लेते थे।

किसी आंदोलन के लिए कभी किसी ने किसी बड़े आदमी से चंदा मांगते नहीं देखा। किसान अपना आंदोलन भी अपने दम खम पर करते थे और खुद नहीं बाकी लोगो को खिलाने के लिए भी साथ सामग्री ले जाते थे। विशाल आंदोलनों को नियंत्रित करना आसान काम नहीं होता है। लेकिन टिकैत इस मामलें में बहुत सफल रहे। बड़ा से बड़ा और सरकार को हिला देने वाला आंदोलन क्यों न रहा हो, वह अनुशासनहीन नहीं रहा। मेरठ या दिल्ली में लाखों किसानों के जमावड़े के बाद भी न कहीं मारपीट न किसी दुकान वालों से लूटपाट या कोई आवंछित घटना नहीं हुई। गांव से महिलांए खाने पीने की सामग्री, हलवा, पूड़ी, छाछ, गुड़ इतनी मात्रा में भेजती थीं कि किसान ही नहीं पुलिस, पत्रकार और आम गरीब लोग सब खा पी लेते थे, कम नहीं पड़ता था। हर आंदोलन में टिकैत ने पूर्व सैनिकों को भी जोड़ लेते थे। वे किसानों की लूट के खिलाफ सरकारों को आगाह करते रहे। उनका यह कहना एक हद तक सही है कि अगर 1967 को आधार साल मान कर कृषि उपज और बाकी सामानों की कीमतों का औसत निकाल कर फसलों का दाम तय हो तो एक हद तक किसानों की समस्या हल हो सकती है।

चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत भारतीय किसान राजनीति में एक प्रकाश पुंज की तरह उभरे थे। मेरठ से शुरू यह आंदोलन बुलंदियो तक गया और दुनिया के तमाम हिस्सों में इसकी गूंज दिखी। 1989 में उनके नेतृत्व में किसान संगठनों ने दिल्ली में बोट क्लब पर जो विशाल आयोजन किया था वैसा आयोजन फिर नहीं हुआ। चौधरी टिकैत भले पढ़े–लिखे नेताओं में शुमार न होते हों लेकिन उनमें जैसी गहरी समझ थी वैसी डाक्टरेट की डिग्री वालों में भी नहीं दिखती। साहसी टिकैत को सड़क और गांव की पगडंडियों से उनको दृष्टि मिली थी। 15 मई 2011 को 76 साल की आयु में उनका निधन हुआ लेकिन किसान आंदोलन आज भी उनकी ही तरफ देखता है।

संदर्भ ग्रन्थ

- सिंह, राजेन्द्र : शोसल मूवमेंट इन इंडिया
- आनन्द चक्रवती : भारत में किसान आंदोलन
- रजनीपाम दत्त : इंडिया टूडे एण्ड टुमारो
- चौधरी, सुखबीर : पीजेंट्स एण्ड वकर्स इन इंडिया

© RRIJM 2015, All Rights Reserved